पाठ 2. सदुपयोग

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में स्व-जागरूकता का कौशल विकसित करना है ताकि वे अपनी पसंद व नापसंद की पहचान कर सकें। हमारे देश में कई ऐसे ऋषि-मुनि हुए हैं जिनके कार्य उन्हें देवता तुल्य बनाते हैं। महात्मा बुद्ध उनमें से एक हैं। उनके जीवन से जुड़े इस पाठ में बताया गया है कि अनुपयोगी वस्तुओं को पुनर्चक्रण के माध्यम से उपयोगी बनाया जा सकता है। ऐसा करके हम अपना और अपने पर्यावरण का कल्याण कर सकते हैं।

पाठ का सार

महात्मा बुद्ध के एक शिष्य का वस्त्र फट गया। महात्मा बुद्ध ने उसे नया वस्त्र दिया। बाद में उन्होंने जानना चाहा कि उसके शिष्य ने पुराने वस्त्र का क्या किया। महात्मा बुद्ध को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उनके शिष्य ने पुराने वस्त्र का बिछावन, बिछावन का पर्दा, पर्दे का रसोईघर में बर्तन पकड़ने वाला कपड़ा और उस कपड़े का पोंछा बना लिया था। इस प्रकार इस कहानी में बेकार हुई वस्तुओं के सदुपयोग का तरीका और उसकी महत्ता का वर्णन किया गया है।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  पाठ का सस्वर वाचन करवाएँ और बीच-बीच में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताते जाएँ। जिन-जिन वस्तुओं का ज़िक्र पाठ में हुआ है, उन वस्तुओं की उपयोगिता ज़रूर बताएँ। कक्षा के किन्हीं दो बच्चों से महात्मा बुद्ध और उनके शिष्य के बीच हुए वार्तालाप को अभिनय सहित वाचन करने को कहें। पाठ में अंतर्निहित जीवन मूल्यों की चर्चा अवश्य करें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 42** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य व्याकरण एवं रचना पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - बच्चों को बताएँ कि कुछ शब्दांश ऐसे होते हैं जिन्हें शब्द के अंत में जोड़कर नए शब्द बनाए जा सकते हैं। 'पा', 'पन', 'हट' आदि से बने शब्द उदाहरण के तौर पर बताए जा सकते हैं। 'ता' को जोड़कर बने शब्दों के अर्थ भी बताएँ।
  - बच्चों को समझाएँ कि मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द समानार्थी कहलाते हैं।
  - संयुक्त अक्षर की परिभाषा उदाहरण सहित बताएँ। दिए गए शब्दों से बने एक-एक शब्द पाठ में से ढूँढ़ने को कहें।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - चीज़ों को बार-बार उपयोग में लाने की प्रेरणा दें। आपसी सहयोग और सहायता की महत्ता के बारे में भी बतलाएँ।